मृगनयनी कथ्य संदर्भ

डॉ. प्रेमसिंह के. क्षत्रिय

अध्यापक , अहमदाबाद

वृंदावनलाल वर्मा का जन्म 9 जनवरी 1889 ई. को एक सामान्य कायस्थ परिवार में झाँसी जिले के मऊरानी गाँव में हुआ था । वर्माजी ने अपने साहित्य सृजन में कहानियों, नाटक, संस्मरण, आत्मकथा, ऐतिहासिक उपन्यास एकांकी एवं सामाजिक उपन्यासों की रचना किया । इसी श्रृंखला के अन्तर्गत यह ऐतिहासिक उपन्यास मृगनयनी है । मृगनयनी का लेखन वर्ष 1950 प्रकाशन वर्षअ भी 1950 है । ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, इसमें ग्वालियर के राजा मानसिंह और मृगनयनी की प्रेमकहानी का सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है । अब हम इस प्रकार मृगनयनी के कथा संदर्भ को देखेगे ।

मृगनयनी वर्मा जी का बृहद ऐतिहासिक उपन्यास है । कथा ग्वालियर तोमर वंशीय शासक मानसिंह से सम्बन्धित है । मानसिंह तोमर का शासनकाल 1486 से 1516 तक माना जाता है । इस युग की आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल के साथ ही, जो भारतीय सांस्कृतिक तत्व विकास पर थे उनका चित्रण कथा में मिलता है । इन सांस्कृतिक तत्वों का निर्वाह राजा मानसिंह, रानी मृगनयनी, लाखी, अटल का । रोमांस वर्माजी का प्रिय विषय रहा है और प्रत्येक उपन्यास में इसका चित्रण हुआ है । परन्तु सदैव ही यह भारतीय मर्यादाओं के अन्दर रहा है, उसमें कही भी अश्लीलता या नग्नता नहीं आ पाई है । इस उपन्यास के भी दोनों मुख्य प्रणय प्रसंग गाम्भीर्य और पवित्रता लिए हुए है । इनमें कहीं भी छिछोरापन या वासना की गन्ध नहीं मिलती ।

बहलोल लोधी और उसके उत्तराधिकारी सिकंदर लोधी जैसे आक्रमणकारियों को आक्रमण से संपूर्ण ग्वालियर राज्य ध्वस्त हो गया था । उनकी बर्बरता से ग्राम नगर वीरान हो गए थे, कृषि और व्यावसायि उजड़ गए । ग्वालियर राज्य के समीपस्थ राई ग्राम की भी यही दशा थी । युद्ध की समाप्ति पर अपने टूटे मनोबल से कृषक अपने कार्यो में संलग्न हो गए । उसी गाँव में गूजर जाति के अटल और निन्नी नाम के भाई-बहन रहा करते थे । उनके पड़ोस में दूसरे गाँव से आकर बसने वाली एक अहीर युवती लाखी भी अपनी वृद्ध माता के साथ रहती थी । अपनी समवयस्कता में निन्नी और लाखी की प्रगाढ़ मैत्री थी । दोनों साथ-साथ जंगलों में शिकार खेलती तीरंदाजी का अभ्यास करती । दोनों के रूप सौन्दर्य और शौर्य की चर्चा होने लगी । मालवा का ग्यासुद्दीन तथा गुजरात का सुल्तान महमूद वघर्रा उनकी प्राप्ति के लिए व्यग्र हो उठे । ग्यासुद्दीन ने नड-बेड़ियो के द्वारा उन दोनों को पकड़ने की योजना बनाई । एक दिन निन्नी और लाखी सुअर और अरने के शिकार कर घर लौटीं तो उन्होंने देखा कि लाखी की माँ मर पड़ी है । लाखी बिलख-बिलख कर रोने लगी । उसके लिए संसार अंधकारमय हो गया था, किन्तु निन्नी और अटल से संतप्त हृदय से लाखी को सांत्वना दी और अपने साथ रख लिया । तीनों साथ रहकर सुख-दुःख के सहभागी बन गए । अटल और लाखी प्रेमसूत्र में बंध गए । ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमस से राई गाँव का पुजारी बोधन शास्त्री अपने मंदिर के जीर्णोद्धार के निवेदन क्रम में दोनों के रूप गुण की चर्चा कर चुका था । राजा ने राई गाँव में आने के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया

था । इधर ग्यासुद्दीन के नट-बेडियो राई गाँव के नजदीक जंगल में अपना डेरा डाल चुके थे । निन्नी (मृगनयनी) और लाखी को मांडू ले जाने की उनकी योजना बनने लगी थी । जब दोनों जंगल में शइकार खेलने पर चलने का अभ्यास प्रारंभ कर दिया । धीरे-धीरे नटों से लेन-देन का भी संपर्क हो गया । इन दोनों ने अपने शिकार में प्राप्त एक सूअर को देकर कुछ गुड़ और चावल लिए । ग्यासुद्दीन के द्वारा दि एगए वस्त्रालंकारो को दिखा पिल्ली नटिनी उन्हें प्रलोभन देने लगी । फिर तंत्र-मंत्र की बातें चली । नटिनी ने दोनों का हाथ देखकर भविष्यवाणी की कि निन्नी किसी बड़े राजा से ब्याही जाएगी और लाखी किसी बड़ि किलेदार से । इस प्रकार उनसे उन दोनों का संपर्क बढ़ता गया ।

अटल आठ दिन पूर्व ग्यालियर गया था । वहाँ से लौटा तो तीर, बर्छियों के साथ उनके लिए कुछ वस्त्र और आभूषण भी लेता आया । प्रसन्नता के साथ दोनों ने सारी वस्तुएँ ले ली । जब दूसरे दिन वे शिकार खेलने गई तो उन्हें जंगल में ग्यासुद्दीन के चार सवारों ने घेर लिया । उनकी नियत से दोनों परिचित हो गई । एक को निन्नी ने अपनी बर्छी से और एक की लाखी ने अपने तीर से मार गिराया । शेष सवार प्राण बचाकर भाग निकले । गाँव में जब इसकी चर्चा हुई तो सभी युद्ध के अज्ञात भय से आशंकित हो उठे । ग्रामीणों ने निवेदन कर बोधन पुजारी की सुरक्षा हेतु से पुनः ग्वालियर में राजा के पास भेजा । ग्वालियर पहुँचकर बोधन ने राजा को सारा वृत्तांत कह सुनाया । राजा मानसिंह ने सशंकित ग्रामीणों को आश्वस्त करने के लिए शीघ्र राई गाँव में जाने की योजना बनाई । दूसरे दिन राजा के आगमन की सूचना पाकर गाँव के सभी स्त्री-पुरुष उनकी आरती उतारने दौड़ पड़े । निन्नी के अद्वितीय सौन्दर्य को देख राजा मानसिंह विस्मय-विमुग्ध हो उठे । अगले दिन राजकीय आखेट का आयोजन हुआ । निन्नी और लाखी ने अपने अपूर्व शौर्य का परिचय दिया । निन्नी ने अपने एक तीर से नाहर को मार गिराया और बर्छे से अरने को घायल कर उसके शींग पकड़ पीछे ठेल दिया । राजा मानसिंह उनके रोमांचक शौर्य से अभिभूत हो गए । उन्होंने अपने गले की स्वर्णमाला उतारकर निन्नी के गले में डाल दी और उससे आजीवन संगिनी बनने का वचन राजा के हाथ में अपना हाथ दे निन्नी ने अपनी मौन स्वीकृति प्रकट की ।

अटल की सोच में आधुनिकता बोध – मानसिंह और निन्नी का विवाह संपन्न हो गया । निन्नी मृगनयनी बनकर राजा मानसिंह के साथ ग्वालियर आयी । इसके बाद अटल से लाखी के समक्ष अपने विवाह का प्रस्ताव रखा । लाखी ने स्वीकृति दे दी । अटल बोधन पुजारी के पास विवाह का मुहूर्त निकलवाने गया, बोधन पुजारी ने उशके विवाह को वर्णाश्रम धर्म के विरुद्ध बतलाकर अस्वीकार कर दिया । यही आधुनिकता है, जो अटल ने अपने प्रेम सम्बन्ध को विवाह स्वरूप प्रदान करने हेतु वह बोधन पुजारी के समक्ष विचार रखता है, परन्तु बोधन इसे वर्णाश्रम का कारण बताकर अस्वीकार करता है यह जो अटल की हिंमत है वही आधुनिकता है । जो इस उपन्यास में अच्छे छंग से व्यक्त हुआ है । क्षुब्ध होकर अटल ने गंगाजल को साक्षी मानकर लाखी को अपनी पत्नी मान लिया । उसने अपने विवाह का गाँव में प्रचार कर दिया । गाँव वाले उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगे । सामाजिक बहिष्कार के साथ उसे यह आशंका थी कि आस-पास के अहीर आकर उसे कष्ट न दे । अटल और लाखी गाँव छोड़ नटों के साथ नरवर के समीप मगरनी चले आए । इधर नवाब ग्यासुद्दीन नरवर पर अपनी सेना लेकर आ धमका । मगरोनी से भाग सबने नरवर के किले में शरण ली । एकांत में पिल्ली नटिनी ने लाखी से को बतलाया कि सुल्तान उसी की खोज करता-करता यहाँ तक आया है । सारे रहस्य को जानकर लाखी

की भौहे फड़क उठी। उसने अपने को नियंत्रित रखते हुए। सुल्तान के पास जाने की सहमति प्रकट की। रात को भाग निकलने की योजना बनाई गई। किले के कंगूरे से बाहर के वृक्ष से रस्सी फँसा दी गई। सभी नट एक-एक कर उतर गए।

जब पिल्ली जाने लगी तो लाखी ने अपने तेज छुरे से रस्सी काट दी। पिल्ली खाई में गिरकर सदा के लिए समाप्त हो गई। जब सारी स्थिति अटल को मालूम हुई तो वह अवाक् रह गया। किले के सभी सैनिक सतर्क हो गए। गयास ने नरवर पर भरपूर आक्रमण किया, परन्तु ग्वालियर से मानसिंह के आ जाने पर उसका आक्रमण विफल हो गया। मानसिंह ने लाखी के शौर्य से प्रभावित होकर मोतियों की माला उसके गले में डाल दी। उन्होंने नरवर किले की जागीर अटल के नाम लगा दी, परन्तु व्यवस्था पूर्ववत् रखी। कुछ दिनों के बाद वे लाखी और अटल को साथ लेकर ग्वालियर लौट आये। लाखी और अटल का विधिवत् विवाह संपन्न हुआ। राई गाँव में गढ़ी बनाकर राजा मानसिंह ने अटल को वहाँ की जागीर दे दी। अटल ने अपने विवाह की बात बोधन पंडि से की, परन्तु बोधन पंडित ने वर्णाश्रम से अलग होने का कारण बताया, इसके बाद अटल ने हिम्मतपूर्वक लाखी को अपना लिया और आज उन दोनों का विवाह सम्बन्ध भी हो गया और मानसिंह के द्वारा अटल को जागीर भी दी जाती है यहाँ पर हमें आधुनिकता दिखाई देती है कि अटल में वर्तमान समाज का सामना करने की क्षमता और सामर्थ्य है। जिससे वह बिना हिचकिचाहट के अपने विचारों को बोधन पंडित के समक्ष प्रस्तुत करता है, बोधन पंडित के मना करने पर भी वह हिंमत नहीं हारता, परिस्थितियों के साथ लड़ता है। यही आधुनिकता है।

मृगनयनी के विचारों में आधुनिकता : राजा मानसिंह की आठ रानियाँ पहले से ही थीं। मृगनयनी के प्रति राजा का विशेष आकर्षण देख बड़ी रानी सुमनमोहिनी उससे ईर्ष्या करती थी। कई बार वह वि, देकर उसकी महत्या का असफल प्रयास कर चुकी थी, परन्तु मृगनयनी निरन्तर मर्यादानुकूल आचरण करती रही। यही आधुनिकता है, जो किसी भी परिस्थिति में मृगनयनी अपने को उसका अनुकूल बना लेती है। कभी भी किसी भी समय घबराती नहीं है। हिम्मत-धीरज के साथ आगे प्रगति करती है। मृगनयनी के इस पात्र से हमें आधुनिक बोध मिलता है। राई गाँव से आने के बाद उसने संगीत तथा अन्य कलाओं का अध्ययन मनन शुरू कर दिया था। उस बीच राजा मानसिंह ने कई मन्दिर और भवन बनवाए। प्रजाहित के लिए भी उसने अनेक कार्य किए। कुछ दिनो के बाद ग्वालियर पर सिकन्दर लोधी का पुनः आक्रमण हुआ। राईगढ़ की रक्षा में लाखी ने अपने अद्वितीय शौर्य का प्रदर्शन किया। कई शत्रु सैनिकों को मौत के घाट उतारती हुई उसने वीरगति प्राप्त की। अटल भी भयंकर युद्ध करता हुआ मारा गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुन मृगनयनी को अत्यन्त दुःख हुआ। सिकन्दर ने नरवर के किले पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। वहाँ की सारी मूर्तियो को तोड़-तोड़ नगर को वीरान बनाकर राजसिंह को नरवर की जागीर दे, वह दिल्ली लौट आया। मृगनयनी अपनी ढलती अवस्था के साथ संगीत कला आदि की साधना में विशेष रूचि लेने लगी। उसे दो पुत्र थे, राजसिंह और बालसिंह। उत्तराधिकार के प्रश्न पर उसने सुमनमोहिनी के पुत्र विक्रमादित्य को अधिकार दिलाया। उसके इस त्याग से राजा मानसिंह विह्वल हो उसे गले लगा लिया। यहाँ पर आधुनिकता प्रकट होती है एक विशेष त्याग और समर्पण की भावना मृगनयनी में है, तो सभी में नहीं होती। यह अपने पुत्र की

उत्तराधिकार न दिलाकर बल्कि बड़ी रानी के पुत्र को अधिकार दिलाती है। इससे हमें आधुनिकता बोध प्रोप्त होता है।

चरित्र-चित्रण : चरित्र-चित्रण की दृष्टि से जिन चरित्रों को उपन्यास के विस्तृत परिवेश में प्रस्तुत किया गया है, उनसे तत्कालीन राजा-महाराजा, नवाब-सुल्तान, सैनिक सेनानायक, गाँव और नगर के सामान्यजन, मंदिर के पुजारी और कर्मकांडी पंडित, शैव वैष्णव, नट-बेड़िये, संगीतज्ञ आदि का समुचित एवं विश्वस्त परिचय मिल जाता है । उपन्यास के प्रमुख पुरुष और नारी पात्रों में राजा मानसिंह, अटल, बोधन पंडित, विजय जंगम, निहालसिंह, बैजू, राजसिंह, ग्यासुद्दीन, नसीरुद्दीन सुलतान बर्धरा, सिकन्दर लोधी, मृगनयनी लाखी, सुमन मोहिनी, पिल्ली, नटिनी, कला इत्यादि है।

उसके चरित्र-परिवर्तन में लेखक की कल्पना अप्रत्याशित रूप में व्यक्त नहीं है एवं उसके अनेक पूर्व-संकेत है। विवाह के पूर्व की स्थिति में वह कितनी महत्वाकांक्षिणी है। प्रतिकूल परिस्थिति में भी उसके मन में अपने अनुकूल पति की आकांक्षा है, तभी तो अपनी सगाई की बात चलने पर वह लाखी से कहती है भैया से कहना कि सगाई की चर्चा को आगे न बढ़ावे। मैं ब्याह न करूँगी। उसके अचेतन मन में रानी बनने की कामना उसकी इस उक्ति से चरितार्थ होती है, राजा लोग अपने थोड़े से भाई बंधुओं को किसी हढ़ में बंद करके लड़ते-लड़ते मर जाते है और उसकी स्त्रियाँ चिता में जलकर भस्म हो जाती है। क्या ये स्त्रियाँ और कमान चलाना नहीं जानती होगी ? क्या इनके खेत नहीं होंगे, जिनकी रखवाली करने के लिए और आनन्दपूर्ण जीवन की चिन्ता को सहज रूप में दृष्टिगत किया है।

डॉ. प्रेमसिंह के. क्षत्रिय
अध्यापक अहमदाबाद
5, फौजदार न्यू पार्क,
सैजपुर-बोघा,
नरोडा रोड,
अहमदाबाद-382345

संदर्भ

1) मृगनयनी – वृंदावनलाल वर्मा
2) ऐतिहासिक उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा डॉ. रामदरश मिश्र
3) अपनी कहानी – वृंदावनलाल वर्मा
4) हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
5) हिन्दी उपन्यास – शिवनारायण श्रीवास्तव
6) यथार्थवाद – डॉ. शिवकुमार मिश्र